सूरह अल-अस्र की व्याख्या

विवरण: यह समझना कि यह सूरह समय का उपयोग बुद्धिमानी से करने के महत्व पर जोर देती है। यह बताती है कि मानवजाति को इस दुनिया मे और अगले जीवन मे नुकसान से क्या बचा सकता है।
द्वारा Aisha Stacey (© 2014 NewMuslims.com)
प्रकाशित हुआ 08 Nov 2022 - अंतिम बार संशोधित 07 Nov 2022
श्रेणी: पाठ >पवित्र क़ुरआन > चयनित छंद की व्याख्या

उद्देश्य:

· क़ुरआन के सबसे महान सूरह में से एक सूरह अल-अस्र का अर्थ समझना।

अरबी शब्द:

· हदीस - (बहुवचन - हदीसें) यह एक जानकारी या कहानी का एक टुकड़ा है। इस्लाम में यह पैगंबर
मुहम्मद और उनके साथियों के कथनों और कार्यों का एक वर्णनात्मक रिकॉर्ड है।

· सहाबा - "सहाबी" का बहुवचन, जिसका अर्थ है पैगंबर के साथी। एक सहाबी, जैसा कि आज आमतौर
पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह है जिसने पैगंबर मुहम्मद को देखा, उन पर विश्वास किया
और एक मुसलमान के रूप में मर गया।

· सब्र - धैर्य और यह एक मूल शब्द से आया है जिसका अर्थ है रुकना या बचना।

· सुन्नत - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका
अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, किया या करने को कहा।

· हक़ - सच। अल-हक़ (सच्चा) अल्लाह के नामों में से एक नाम है।

परिचय

सूरह अल-अस्र क़ुरआन का एक सौ तीन (103) नंबर का
सूरह है। इसे व्यापकता के अतुलनीय उदाहरण के रूप में
संदर्भित किया गया है क्योंकि यह तीन संक्षिप्त छंदों में
सफलता का मार्ग और विनाश का मार्ग बताता है। इमाम
अश-शफी ने कहा कि अगर लोग इस सूरह को अच्छी तरह से
मानते हैं तो यह मार्गदर्शन के लिए पर्याप्त होगा। कई
हदीस उस उच्च सम्मान के बारे में बताते हैं जिसमें सहाबा ने
इस सूरह का पालन किया था। तदनुसार जब भी कोई दो या दो
से अधिक सहाबी मिलते, तो वे सूरह अल-अस्र पढ़े बिना
एक-दूसरे से अलग नहीं होते थे।[1]

यह वेब साइट आपको सूरह अल-अस्र को सीखने, पढ़ने और याद करने में मदद करेगी। http://www.mounthira.com/learning/surah/103-al-asr/

सूरह अल-अस्र की व्याख्या 1 of 3 www.NewMuslims.com

"निचड़ते समय की शपथ! निःसंदेह, इन्सान क्षति में है। सिवा उनके, जो ईमान लाये तथा
सदाचार किये एवं एक-दूसरे को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का उपदेश देते रहे।" (क़ुरआन
103)

यह सूरह मानवजाति के लिए नसीहत है। अल्लाह "समय" की शपथ लेता है और घोषणा करता है कि मानवजाति नुकसान की स्थिति में है। हर एक इंसान, पुरुष या महिला, नुकसान की स्थिति में है, सिवाय उन लोगों के जो चार काम करते हैं; आस्था रखते हैं, धर्म के काम करते हैं, और एक दूसरे को सत्य, और सब्र करने की सलाह देते हैं।

अस्र का अर्थ

अस्र शब्द का सरल अनुवाद समय है। हालांकि अस्र के अरबी शब्द समय की तुलना में एक अन्य अरबी शब्द का बहुत गहरा अर्थ है, दहर। दहर का अर्थ है वो समय जिसकी कोई सीमा नहीं है, दूसरी ओर अस्र का अर्थ है वह समय जो सीमित है; वह समय जो समाप्त हो जाएगा। भाषाई स्तर पर अस्र का एक अर्थ कुछ ऐसा होता है जिसे दबाया या निचोड़ा जा सके। अल्लाह समय की कसम खा रहा है, एक सीमित समय, एक समय जो समाप्त होगा और एक समय जिसे निचोड़ा या दबाया जा सकता ताकि मानवजाति अपने सीमित समय से जितना संभव हो उतना प्राप्त कर सकें।

अल्लाह हमें समय बीतने पर चिंतन करने के लिए भी कह रहा है। एक और अर्थ जो अस्र शब्द को दिया गया है वह है गुजरता दिन, असर की नमाज़ का समय, जब दिन समाप्त होने वाला होता है। अल्लाह हमें बता रहा है कि हमारा समय छोटा और सीमित है और अगर हम इसका सदुपयोग नहीं करेंगे तो हम निश्चित रूप से हारे हुए हैं, वास्तव में, अल्लाह कहता है, हम नुकसान में हैं।

नुकसान का अर्थ

नुकसान का अरबी शब्द खुस्र है और यह लाभ का विपरीत है, और इस प्रकार इसका अर्थ दिवालियापन भी है। इस संदर्भ में इसका अर्थ यह हो सकता है कि मानवजाति परलोक के लिए अपनी मुख्य पूंजी खो देगा यदि वह इस जीवन का उपयोग आस्था और कर्मों से उसे हासिल करने के बजाय, इसे अविश्वास और पाप से खत्म कर दे।

हमें कुछ बहुत ही खास खोने का खतरा है, और यह परलोक में एक आनंदमय जीवन है। हालांकि उस महान नुकसान से पहले हम अल्लाह के प्रति अपनी निकटता खो देंगे, और इस प्रकार इस जीवन की शांति और धीरज खो देंगे। संतोष न होने से कभी-कभी मानवजाति विश्वासघाती कार्य कर सकता है और मुसीबत और संघर्ष के समय मे गलत कार्य कर सकता है। लेकिन अल्लाह हमें लगातार चेतावनी दे रहा है और यहां वह एक बार फिर कह रहा है, रुको, सोचो और खुद को बचाओ। अपने चरित्र मे ये चार चीज़ें रखकर खुद को बचाएं:

1. विश्वास करना। मोक्ष का पहला कदम सही विश्वास को बनाए रखना और दृढ़ विश्वास और
निश्चितता के साथ उसका पालन करना है।

2. अच्छे कर्म करना। हम अल्लाह को प्रसन्न करने वाले कार्य कर के इस निश्चितता को प्राप्त कर
सकते हैं; हम अपने कर्मो या धार्मिक कार्यों से अपना विश्वास दिखा सकते हैं। हमारे कर्म क़ुरआन
और प्रामाणिक सुन्नत के अनुसार होने चाहिए। ये कर्म हमारी भावना और इच्छा के अनुसार नहीं होने
चाहिए। सफलता का सच्चा संकेत अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करना और पाप करने की इच्छा का
विरोध करना है।

सूरह अल-अस्र की व्याख्या 2 of 3 www.NewMuslims.com

3. सत्य को प्रोत्साहित करना, इसकी सलाह देना या इसका पालन करना। अरबी में हक़। अल्लाह हमें एक-दूसरे को सच्चाई याद दिलाने और इसके प्रति वफादार रहने के लिए प्रोत्साहित करने, और न्याय के लिए सच्चाई को स्पष्ट रूप से सामने लाने के लिए कह रहा है।

4. एक-दूसरे को सब्र करने की सलाह देना चौथी विशेषता है, और हक़ के प्रति प्रतिबद्धता स्थापित करना सब्र के बिना संभव नहीं होगा। अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करने में दृढ़ रहने के लिए धैर्य
की आवश्यकता होती है, पापों से दूर रहने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है, और विपत्ति के समय
निराश न होने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। इब्नुल क़य्यिम[2] ने समझाया कि सब्र होने का
मतलब है खुद को निराशा से रोकने की क्षमता, शिकायत से बचना, और दुख और चिंता के समय में खुद
को नियंत्रित करना।

यह सूरह उन लोगों को सलाह देती है जो परलोक में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए सामूहिक रूप से कार्य करने पर विश्वास करते हैं। इसका अर्थ है लोगों को अच्छे काम करने के लिए कहना और आमंत्रित करना और उन्हें पाप और अविश्वास में पड़ने से रोकना।

इस सूरह का रहस्योद्घाटन कठिन समय के दौरान हुआ था। शुरुआती मुसलमानों को ज़ुल्मों का सामना करना पड़ा और सूरह अल-अस्र ने उन्हें अपने परीक्षणों और समस्याओं का सामना करने के लिए ताकत और आत्मविश्वास दिया। शायद यही कारण है कि यह सहाबा को बहुत प्रिय थी और यह अभी भी उन लोगों के लिए प्रिय है जो नेक जीवन जीने की कोशिश करते हैं। आजकल जब कोई व्यक्ति खुद को नुकसान में पाए, तो वह सूरह अल-अस्र में अल्लाह द्वारा दी गई संक्षिप्त सलाह का पालन करके अपनी स्थिति को बदल सकता है।

फुटनोट:

[1] अत-तबरानी

[2] इब्नुल क़य्यिम अल जवजियाह, 1997, पेशेंस एंड ग्रटिटूड, अंग्रेजी अनुवाद, यूनाइटेड किंगडम, ताहा प्रकाशक

इस लेख का वेब पता:
http://www.newmuslims.com/hi/lessons/247

कॉपीराइट © 2011-2022 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।

ajsultan

सूरह अल-अस्र की व्याख्या 3 of 3 www.NewMuslims.com